भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

खेती दुनिया

www.khetiduniyan.in

Excellence in Agri Info
KHETI DUNIYAN

KHETI DUNIYAN, PATIALA
All Subject to Patiala Jurisdiction.
BOOK POST – PRINTED MATTER

• Issue Dated 10-02-2024 • Vol.8 No.06 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

हरियाणा, राजस्थान और पंजाब के किसानों को इस साल गेहूं की अधिक पैदावार की उम्मीद

रबी की बुवाई पूरी, गेहूं का रकबा बढ़ कर 341.57 लाख हैक्टेयर

हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के किसान पूरे जनवरी में अनुकूल मौसम और हाल ही में हुई बारिश के कारण तापमान में गिरावट के कारण इस साल गेहूं की पैदावार में कम से कम सात से 10 प्रतिशत की

वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं।

हालाँकि, इस महीने और मार्च में, विशेष रूप से अनाज भरने के चरण के दौरान, किसी भी असामान्य तापमान वृद्धि से उनकी गणना खराब हो सकती है और पिछले वर्ष से उत्पादन भी कम हो सकता है।

मौजूदा बारिश एक बहुप्रतीक्षित राहत है क्योंकि इससे सिंचाई के एक दौर की बचत होगी। ठंड की स्थिति ने इस बार फसल को बहुत अच्छी तरह से बढ़ने में मदद की है।

पंजाब के लुधियाना के किसान अमरीक सिंह ढिल्लों ने कहा कि उन्होंने फिर से पीबीडब्ल्यू 826 किस्म की बुवाई की है और उन्हें उम्मीद है कि इस बार पिछले साल 25 क्विंटल प्रति एकड़ से अधिक उपज मिलेगी क्योंकि अब तक मौसम बहुत अच्छा था। इसके अलावा, उन्होंने उम्मीद जताई कि पहाड़ियों में बर्फबारी का मौजूदा दौर इस महीने तापमान को सामान्य स्तर से बढ़ने नहीं देगा।

उन्होंने कहा कि मेरी एकमात्र चिंता इस साल बुवाई में कुछ देरी को लेकर है क्योंकि मैंने 2022 में अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में और 2023 में 10 नवंबर के आसपास गेहूं बोया था। उन्होंने कहा कि अब तक कहीं से भी किसी कीट के हमले की कोई रिपोर्ट नहीं है।

राजस्थान में हनुमानगढ़ के अशोक सिंह और श्री गंगानगर के सुखविंदर पाल सिंह भी खुश हैं और उन्हें गेहूं की अच्छी फसल की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि हमारे क्षेत्र में, कुछ किसानों ने कपास उखाड़ने के बाद 20 दिसंबर तक भी गेहूं की बुवाई की, हालांकि अधिकांश बुवाई नवंबर के पहले सप्ताह के बाद शुरू हुई। पाल सिंह ने कहा कि 7 नवंबर से पहले बोई गई अगेती फसल में बालियां आना शुरू हो गई हैं।

कृषि मंत्रालय ने 2023-24 सीजन के लिए सभी रबी फसलों की अंतिम बुवाई के आंकड़े जारी किए, जिससे पता चलता है कि इस साल गेहूं का रकबा 2022-23 में 339.20 लाख हैक्टेयर की तुलना में 341.57 लाख हैक्टेयर (एल. एच.) पर समाप्त हुआ। गेहूं के सबसे बड़े उत्पादक उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 101.41 लाख प्रति घंटे की बुवाई दर्ज की गई है, जो 4 प्रतिशत से अधिक है और इससे राजस्थान और महाराष्ट्र में कम कवरेज की भरपाई करने में मदद मिली है। पंजाब और हरियाणा में रकबा पिछले साल के लगभग बराबर है।

करनाल स्थित भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान (आई. आई.डब्ल्यू.बी.आर.) के निदेशक ज्ञानेंद्र सिंह ने पिछले महीने कहा था कि अगर दिन का तापमान सामान्य से एक से दो डिग्री सैल्सियस अधिक है, तो भी फसल के लिए कोई चिंता की बात नहीं है, बशर्ते रात ठंडी हो।

कृषि मंत्रालय के आंकड़ों से यह भी पता चला है कि 2023-24 फसल वर्ष (जुलाई-जून) के दौरान सभी रबी फसलों के तहत बोया गया क्षेत्र 709.29 लाख घंटे पर समाप्त हुआ, जो 2022-23 के दौरान 709.09 लाख घंटे से थोड़ा अधिक है।

रबी सत्र 2023–24 में सरसों फसल का रकबा 5 प्रतिशत बढ़ा : एस.ई.ए.

फसल वर्ष 2023-24 के रबी सत्र में सरसों फसल का रकबा 5 प्रतिशत बढ़ कर 100 लाख हैक्टेयर से अधिक होने का अनुमान है। उद्योग जगत के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। एक बयान में सॉल्वैंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एस.ई.ए.) ने कहा कि उसने अखिल भारतीय सरसों फसल सर्वेक्षण के

गुजरात और राजस्थान के कई ज़िलों में किसानों ने कम कीमत मिलने के कारण सरसों के बजाय अन्य फसलों की खेती का विकल्प चुना

लिए आर.एम.एस.आई. क्रॉपलिटिक्स प्राइवेट लिमिटेड को नामित किया है। आर.एम.एस.आई. ने सुदूर संवेदी माध्यम (रिमोट सैंसिंग) पर आधारित तीसरी रिपोर्ट सौंपी है।

एस.ई.ए. ने कहा कि रिपोर्ट के अनुसार, "अखिल भारतीय सरसों फसल का रकबा 100.39 लाख हैक्टेयर बताया गया है, जो पिछले साल के रिमोट सैंसिंग-आधारित अनुमान 95.76 लाख हैक्टेयर से 5 प्रतिशत अधिक है।" गुजरात और राजस्थान के कई ज़िलों में किसानों ने कम कीमत मिलने के कारण सरसों के बजाय अन्य फसलों की खेती का विकल्प चुना है। राजस्थान में रबी सत्र 2023-24 में रकबा पिछले साल के 37,43,272 हैक्टेयर से बढ़ कर 37,82,222 हैक्टेयर होने का अनुमान है।

उत्तर प्रदेश में सरसों का रकबा 14,00,584 हैक्टेयर से बढ़ कर 17,76,025 हैक्टेयर हो गया है, जबकि मध्य प्रदेश में बुवाई का रकबा 13,23,881 हैक्टेयर से बढ़ कर 13,96,374 हैक्टेयर हो गया है। हालांकि, पश्चिम बंगाल में खेती का रकबा 6,41,170 हैक्टेयर से घट कर 5,90,734 हैक्टेयर रह गया है। घरेलू मांग को पूरा करने के लिए भारत बड़ी मात्रा में खाद्य तेलों का आयात करता है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा
मार्च 2024 में लगाए जा रहे

किसान मेले

पी.ए.यू. कैंपस, लुधियाना में
दो दिवसीय किसान मेला 14 व 15 मार्च

खेती दुनिया द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे
और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

नाग कलां जहांगीर (अमृतसर) 5 मार्च
बल्लोवाल सौंखड़ी (शहीद भगत सिंह नगर) 7 मार्च
बठिण्डा 12 मार्च
फरीदकोट 18 मार्च
गुरदासपुर 20 मार्च
रौणी (पटियाला) 22 मार्च

तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान किसान मेला, दिल्ली में 28 फरवरी से 1 मार्च तक

पर्यावरण संरक्षण मेले में कई प्रकार की गुड़ बनी लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र

मेले में पेश की 12 तरह के गुड़ की वैरायटी, मिर्च गुड़ से हड्डियां और मांसपेशियां होती हैं हेल्दी, असली गुड़ से ठीक होती शूगर

मिर्च गुड़ की मिठास से कई बीमारियों से छुटकारा मिल रहा है। भरपूर मात्रा में आयरन, मैग्नीशियम, पोटाशियम युक्त मिर्च गुड़ रक्त, हड्डियों और मांसपेशियों को हेल्दी रखने में फायदेमंद है। यह दावा मिर्च गुड़ बनाने वाले खुशपाल सिंह ने किया है। उन्होंने रोज़ गार्डन में लगे पर्यावरण संरक्षण मेले में स्टॉल लगाकर 12 प्रकार के गुड़ की प्रदर्शनी लगाई है, जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन रही हैं। नाम के विपरीत इसकी मिठास लोगों की जुबां पर चढ़ गई है। मेले के अंतिम दिन लोगों ने जमकर गुड़ की खरीददारी की।

पी.ए.यू. में कोर्स करके गुड़ बनाना सीखा

खुशपाल सिंह ने बताया कि उन्हें वर्ष 2017 में गुड़ की खूबियों की जानकारी मिली। तब उसी वर्ष पी.ए.यू. से एक महीने का कोर्स किया था। इस कोर्स के माध्यम से गुड़ बनाना सीखा। शुरूआत में सादा गुड़ ही बनाने लगे। इसके बाद आयुर्वेदिक डॉक्टरों के निर्देशन में गुड़ की वैरायटी तैयार की। सबसे पहले मूंगफली वाला गुड़ बनाया, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया। फिर तिल वाला गुड़, अलसी वाला गुड़ आदि बनाने की शुरूआत कर दी।

मिर्च को मीठा बनाने का आया विचार, डॉक्टर से सलाह कर की तैयार

खुशपाल ने बताया कि उन्हें मिर्च को मीठा बनाने का विचार आया, लेकिन इसका स्वाद मीठा बनाना ही चुनौती थी। उन्होंने एक बार फिर आयुर्वेदिक डॉक्टरों से सम्पर्क साधा। तय किया कि इसे दवा के रूप में बनाया जाएगा। इसके लिए रिसर्च शुरू कर दी। कई प्रयोगों के बाद आखिर में मिर्च गुड़ तैयार किया, जो स्वाद में मीठा ही है। खुशपाल अब खुद बनाई गई गुड़ की सभी वैरायटियों को पेटेंट करवाने पर विचार कर रहे हैं।

नहीं है कोई साइड इफेक्ट

खुशपाल का दावा है कि आयुर्वेदिक औषधि के रूप में तैयार किए गए गुड़ के कोई साइड इफेकट नहीं हैं। उन्होंने गुड़ बनाने के लिए स्वच्छता, शुद्धता और आयुर्वेद का पूर्ण ध्यान रखा है। इसीलिए उनके बनाए गए गुड़ को खाकर कई लोगों को गैस बनना, ब्लड प्रेशर और चमड़ी रोग से छुटकारा मिला है। अलसी गुड़ खाने से शुगर ठीक होती है और सिर्फ एक माह में ही शरीर की हड्डियों का दर्द खत्म हो जाता है।

गुड़ की ये वैरायटियां कीं तैयार

* मूंगफली वाला गुड़ * सौंफ वाला गुड़ * तिल वाला गुड़ * अलसी वाला गुड़ * हल्दी मिक्स गुड़ * ड्राई फ्रूट वाला गुड़ * बर्फी वाला गुड़ * गाजर वाला गुड़ * काजू वाला गुड़ * अंगूरी गुड़ * मिर्च गुड़ * दूध वाला गुड़

डॉ. नेहा चौहान, डॉ. शिवानी ठाकुर, डॉ. शकुंतला राही, डॉ. एल.के. शर्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र, मंडी, चौ. सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)

कृषि भारत की लगभग 50 प्रतिशत मानव आबादी के लिए आजीविका का स्त्रोत है। यह दुनिया की सबसे बड़ी मानव आबादी का घर है। लगभग 309 मिलियन टन खाद्यान्न के वर्तमान स्तर के साथ उत्पादन (गेहूं और चावल प्रमुख हैं), देश द्वारा 400 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न का उत्पादन करना है 2050 में 1.68 अरब लोगों को खाना खिलाना है। लगातार सघन होती खेती एवं खादों के असंतुलित प्रयोग से भूमि में जैविक पदार्थ तथा आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में निरंतर कमी हो रही है।

पौधों में व्यवहारिक रूप से सभी (92) प्राकृतिक तत्व होते हैं, लेकिन 17 तत्व आवश्यक पोषक तत्व होते हैं, जो पौधे के विकास के लिए आवश्यक होते हैं। ये पोषक तत्व या तो मिट्टी द्वारा या पौधे और पशु खाद या अन्य जैविक स्त्रोतों या खनिज उर्वरकों द्वारा प्रदान किए जाते हैं। इनमें से तीन, कार्बन (सी), हाइड्रोजन (एच) और ऑक्सीजन (ओ) सबसे बड़ी मात्रा में उपयोग किए जाते हैं और हवा व पानी द्वारा प्रदान किए जाते हैं। अन्य 14 पोषक तत्व खनिज तत्व हैं, जो पौधों की जड़ों से मिट्टी से प्राप्त होते हैं।

तीन प्रमुख पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाशियम की पौधों को अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। सल्फर, कैल्शियम और मैग्नीशियम तीन माध्यमिक पोषक तत्व पौधों की वृद्धि के लिए प्राथमिक पोषक तत्वों की तुलना में कम आवश्यक नहीं हैं, लेकिन प्राथमिक पोषक तत्वों की तुलना में कुछ कम मात्रा में आवश्यक हैं। कम मात्रा में पौधों द्वारा आवश्यक आठ आवश्यक पोषक तत्वों को सूक्ष्म पोषक कहा जाता है और ये लोहा, जस्ता, तांबा मैगनीज़, मोलिब्डेनम, क्लोरीन, बोरॉन और निकल हैं। कोबाल्ट और सिलिकॉन दो अन्य पोषक तत्व हैं, जो कुछ पौधों की प्रजातियों के लिए फायदेमंद हैं, लेकिन सभी के लिए आवश्यक नहीं हैं।

अर्नोन और स्टाउट (1939) द्वारा किसी तत्व की अनिवार्यता के लिए निम्नलिखित तीन मानदंड दिए गए हैं :

1. तत्व की अनुपस्थिति में पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा नहीं कर सकता है।

2. तत्व का कार्य विशिष्ट होना चाहिए और कोई अन्य तत्व इसे पूर्ण रूप से प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है।

नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग फसल की बुवाई के समय ही करना चाहिए तथा बुवाई के समय पूरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि नाइट्रोजन उर्वरक बहुत घुलनशील होते हैं तथा लीचिंग द्वारा नष्ट हो जाते हैं। नाइट्रोजन उर्वरक के उपयुक्त रूप को लागू करने से लीचिंग कम हो सकती है।

3. तत्व सीधे पौधों के पोषण में एक मेटाबोलाइट के घटक के रूप में या एक एंजाइमिक प्रतिक्रिया आदि के सहकारक के रूप में शामिल होना चाहिए।

आवश्यक पोषक तत्वों की कमी के सामान्य लक्षण : पोषक तत्वों की कमी के कारण होने वाले लक्षणों को आमतौर पर पांच श्रेणियों में बांटा जाता है :

(1) अवरुद्ध वृद्धि (2) हरित हीनता (3) शिराओं के बीच हनित हीनता (4) बैंगनी-लाल रंग और (5) परिगलन।

उर्वरक प्रयोग में सहायक सिद्धांत : फसलों में उर्वरक एवं खादों का प्रयोग मृदा की जांच के अनुसार ही करना चाहिए।

नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग फसल की बुवाई के समय ही करना चाहिए तथा बुवाई के समय पूरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि नाइट्रोजन उर्वरक बहुत घुलनशील होते है तथा लीचिंग द्वारा नष्ट हो जाते हैं। नाइट्रोजन उर्वरक के उपयुक्त रूप को लागू करने से लीचिंग कम हो सकती है। जब लीचिंग क्षमता मध्यम से उच्च हो तो नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग सीमित होना चाहिए। नाइट्रोजन उर्वरकों के प्रयोग का समय फसल के अधिकतम उपयोग की अवधि के जितना संभव हो, उतना निकट होना चाहिए। सतही प्रसारण उर्वरक के बजाय उपसतह आवेदन किया जाना चाहिए।

फास्फोरस उर्वरक का प्रयोग पौधों की जड़ों के पास करना चाहिए, क्योंकि मृदा में इनका स्थिरीकरण हो जाता है।

गोबर की खाद, कम्पोस्ट आदि खादों का प्रयोग फसल बुवाई से 30-45 दिन पहले प्रयोग करना चाहिए ताकि फसल बुवाई के समय यह खादें विच्छेदित होकर मृदा में भली-भांति मिल सकें तथा उसमें उपस्थित पोषक तत्व पौधों को प्राप्त हो सकें।

गोबर की खाद हमेशा सड़ी-गली अवस्था में ही खेतों में प्रयोग करनी चाहिए, ताकि उसमें दीमक आदि का प्रकोप ना हो।

उर्वरकों का संतुलित प्रयोग : खाद तथा उर्वरकों का उचित मात्रा तथा सही विधि से प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि उर्वरकों का अधिक प्रयोग करने से फसलों की उपज घट जाती है तथा किसानों की लागत भी बढ़ जाती है।

पोषक तत्व प्रबंधन के लिए चार कारक - दर, स्त्रोत, समय और स्थान आवश्यक हैं। इन सिद्धांतों का पालन करते हुए उत्पादक उन उर्वरकों का प्रयोग कर सकते हैं, जो अत्याधिक खाद डाले बिना फसल के पोषण को अधिकतम करते हैं।

सही स्त्रोत : फसल-उपलब्ध रूपों में उर्वरक प्रदान करना, जो मिट्टी की स्थिति के लिए उपयुक्त हों और विशेष फसल के लिए पोषक तत्वों का सही संतुलन हो।

सही दर : मिट्टी में पहले से मौजूद पोषक तत्वों और लागू किए जा रहे अन्य संशोधनों में पोषक तत्वों को ध्यान में रखते हुए, फसल की पोषक मांग के अनुरूप मात्रा में उर्वरक लगाना।

सही समय : पौधों को ज़रुरत पड़ने पर उर्वरक की आपूर्ति करना।

सही जगह : ऐसे स्थान पर उर्वरक प्रदान करना, जहां पौधों की जड़ें पोषक तत्वों तक पहुंच सकें और खेतों में मिट्टी पोषक तत्वों की उपलब्धता में स्थानिक भिन्नता पर विचार करें। ये सभी कारक स्थानीय पर्यावरण और मिट्टी की स्थिति पर भी निर्भर हैं। इन अंत: क्रियाओं के कारण, जो 'सही' है, वह खेत और फसल के प्रकार के अनुसार अलग-अलग होगा।

अंतरिम बजट से गायब हुआ किसान

सरकार द्वारा चुनाव से 2 महीने पहले प्रस्तुत अंतरिम बजट से यूं तो किसानों ने कोई बड़ी उम्मीद नहीं बांधी थी। लेकिन कृषि संकट को देखते हुए किसानों को कुछ न्यूनतम अपेक्षाओं का अधिकार था। लेकिन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उस हल्की-सी उम्मीद पर भी पानी फेर दिया। अपने भाषण में किसान का नाम तो कई बार लिया, लेकिन इस अंतरिम बजट में उसे अंतरिम राहत भी नहीं दी। न पैसा दिया और न ही कृषि क्षेत्र का पूरा सच ही देश के सामने रखा। उलटे कृषि और प्रमुख योजनाओं का बजट भी घटा दिया।

बजट से 2 दिन पहले संसद में प्रस्तुत आर्थिक समीक्षा दस्तावेज यह रेखांकित करता है कि इस वर्ष कृषि क्षेत्र में वृद्धि (ग्रॉस वैल्यू एडेड दर) केवल 1.8 प्रतिशत हुई है। यह दर पिछले वर्षों के कृषि वृद्धि की औसत दर की आधी भी नहीं है और इस वर्ष बाकी सब क्षेत्र में हुई वृद्धि का एक चौथाई के बराबर है। इसलिए किसानों और कुछ कृषि विशेषज्ञों की उम्मीद थी कि सरकार इस संकट को देखते हुए कुछ अंतरिम राहत देगी। किसान सम्मन निधि की राशि 5 साल पहले 6000 सालाना तय हुई थी, आज उसकी कीमत 5000 से भी कम रह गई है। ऐसी चर्चा थी कि सरकार इसे बढ़ाकर 9000 सालाना कर देगी।

अभी भूमिहीन और बटाईदार किसान इस योजना की परिधि से बाहर हैं। उन्हें इसमें शामिल करने की आशा थी। कम से कम इतनी उम्मीद तो थी ही कि सरकार इस योजना के लाभार्थी किसानों की संख्या में गिरावट को रोकेगी। अफसोस की बात यह है कि इस योजना की राशि या लाभाग्थियों की संख्या बढ़ाने की बजाय वित्त मंत्री ने पूरा सच भी संसद के सामने नहीं रखा। उन्होंने इस योजना के लाभार्थियों की संख्या 11.8 करोड़ बताई जबकि सरकार के अपने आंकड़े के मुताबिक नवंबर 2023 में दी गई अंतिम किस्त केवल 9.08 करोड़ किसानों को गई है। यही नहीं उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लाभार्थी किसानों की संख्या 4 करोड़ बताई जबकि सरकार के अपने आंकड़े केवल 3 करोड़ 40 लाख की संख्या दर्शाते हैं।

पिछले साल की तरह इस साल भी वित्त मंत्री ने इस सरकार द्वारा किसानों को किए गए सबसे बड़े वायदे और दावे के बारे में चुप्पी बनाए रखी। वर्ष 2016 के बजट से पहले प्रधानमंत्री ने 6 वर्ष में किसानों की आय दोगुनी करने का वायदा किया था। यह अवधि फरवरी 2022 में पूरी हो गई। सरकार ने इसे खींचकर 2023 किया। लेकिन 7 वर्ष तक आय डबल करने की डुगडुगी बजाने के बाद सरकार ने इस पर पूरी तरह चुप्पी बना ली। पिछले और इस बजट में इस जुमले का जिक्र भी नहीं हुआ, न ही सरकार ने यह आंकड़ा बताया कि

योगेन्द्र यादव

किसान की आय आखिर कितनी बढ़ी या घटी। अर्थशास्त्रियों के अनुमान बताते हैं कि इन 7 सालों में किसानों की आमदनी उतनी भी नहीं बढ़ी जितनी कि पिछली सरकार के आखिरी 7 सालों में बढ़ी थी।

देश के सभी किसान संगठन पिछले 2 वर्ष से एम.एस.पी. को कानूनी दर्जा दिए जाने का इंतजार कर रहे हैं। दिल्ली में किसान मोर्चा उठते वक्त सरकार ने किसानों को लिखित आश्वासन दिया था कि इस उद्देश्य के लिए एक कमेटी बनाकर सभी किसानों को एम.एस.पी. सुनिश्चित की जाएगी लेकिन आंदोलन समाप्त होने के 2 वर्ष बाद भी कमेटी ने सुचारू रूप से काम करना भी शुरू नहीं किया है। ऊपर से वित्त मंत्री ने यह दावा भी जड़ दिया कि किसानों को पर्याप्त एम.एस.पी. मिल रही है यानी कि सरकार का इसमें सुधार करने का कोई इरादा भी नहीं है। सच यह है कि इस सरकार के 10 वर्ष में 23 में से 21 फसलों में एम.एस.पी. वृद्धि की दर उतनी भी नहीं रही जितनी कि पिछली यू.पी.ए. सरकार के 10 वर्ष में रही थी।

वित्त मंत्री ने किसानों के लिए गाजे-बाजे के साथ की गई बड़ी योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट भी नहीं रखी। वर्ष 2020 में सरकार ने एग्री इंफ्रास्ट्रक्चर फंड के नाम से 1 लाख करोड़ रुपए की योजना की घोषणा की थी जिसे 5 साल में पूरा किया जाना था। अब 4 साल बीतने के बाद उसे योजना में 22,000 करोड़ यानी एक चौथाई से भी कम फंड आबंटित हुआ है। इसी तरह ऐसा लगता है कि एग्रीकल्चर एक्सीलेरेटर फंड पर ब्रेक लग गई है। सरकार की घोषणा पांच साल में 2516 करोड़ रुपए की थी, लेकिन अब तक सिर्फ 106 करोड़ आबंटित हुए हैं।

किसी को कुछ देना तो दूर की बात है, दरअसल सरकार ने इस बजट में किसान का हिस्सा छीन लिया है। पिछले चुनाव से पहले किसान सम्मन निधि की घोषणा के बाद देश के कुल बजट में कृषि बजट का हिस्सा 5.44 प्रतिशत था। पिछले 5 सालों में यह अनुपात हर वर्ष घटता गया है। पिछले साल कुल बजट का 3.20 प्रतिशत कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए प्रस्तावित था, लेकिन संशोधित अनुमान के हिसाब से वास्तविक खर्च 3.13 प्रतिशत ही हुआ। इस साल के बजट अनुमान में इसे और घटाकर 3.08 प्रतिशत कर दिया गया है।

यह कोई छोटी कटौती नहीं है मसलन खाद की सबसिडी पिछले साल में हुए 1.88 लाख करोड़ के खर्चे से घटकर 1.64 लाख करोड़ कर दी गई है, खाद्यान्न सबसिडी 2.12 लाख करोड़ के खर्चे से घटकर 2.05 लाख करोड़ और आशा योजना का खर्च 2200 करोड़ से घटकर 1738 करोड़ कर दिया गया है। राज्यों को सस्ती दाल देने की योजना का आबंटन शून्य कर दिया गया है। मतलब कि पिछले 10 वर्ष की तरह इस साल भी किसानों को बड़े-बड़े शब्द और बड़ा-सा धोखा मिला है। इसीलिए संयुक्त किसान मोर्चा ने आगामी लोकसभा चुनाव में देश भर के किसानों को 'भाजपा हराओ' का नारा दिया है।

किसानों को कृषि मित्र और शत्रु कीटों की पहचान करना सिखाया

भोगपुर में सी.आई.पी.एम.सी. का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र, जालंधर (सी.आई.पी.एम.सी.) कीटीम ने भोगपुर में किसानों को कृषि मित्र और शत्रु कीटों की पहचान करना सिखाया और बीमारियों के प्रति जागरूक किया। किसानों के लिए दो दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम का आयोजन 23-24 जनवरी को किया गया। इस दौरान किसानों को विभिन्न विशेषज्ञों के व्याख्यानों और खेत भ्रमण के जरिये जागरूक किया गया।

प्रबंधन केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. पी.सी. भारद्वाज ने कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए सभी आई.पी.एम. उपकरणों को अपना कर फसली कीटों के प्रबंधन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और कीटनाशकों की आवश्यकता आधारित व विवेकपूर्ण उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कृषि पारिस्थितिक तंत्र विश्लेषण के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान केन्द्र की टीम ने किसानों के साथ खेतों का दौरा भी किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केन्द्र के सहायक पौध संरक्षण अधिकारियों चेतन जनावद, डॉ. अंकित कुमार, चंद्रभान के अलावा राज्य के कृषि अधिकारी डॉ. तेजपाल सिंह, ज़िला प्रशिक्षण अधिकारी डॉ. प्रवीण कुमारी, कृषि अधिकारी डॉ. सुरिंदर पाल और कृषि विस्तार अधिकारी ने भी भाग लिया। उन्होंने किसानों को ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। बाद में किसानों ने भविष्य में भी ऐसे फायदेमंद कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया।

फिरोज़पुर में वेरका करेगा दूध उत्पादकों को सशक्त

नेशनल डेयरी डिवेल्पमेंट बोर्ड (एन.डी.डी.बी.) ने अपनी रिवाइटलाइजिंग प्रोमिसिंग प्रॉड्यूसर्स एण्ड इंस्टीट्यूशन स्कीम के तहत वेरका डेयरी फिरोज़पुर को 8 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता ग्रांट प्रदान की। यह ग्रांट उत्तर भारत की एकमात्र फिरोज़पुर वेरका डेयरी को मिली। एनडीडीबी की इस योजना का उद्देश्य होनहार उत्पादकों के स्वामित्व वाले संस्थानों को उनके समग्र व्यवसाय संचालन को मज़बूत करने के लिए समर्थन देना है, ताकि बाज़ार हिस्सेदारी और लाभ को बढ़ा कर आत्मनिर्भर संस्थान का निर्माण किया जा सके।

वेरका डेयरी के चेयरमैन गुरभेज सिंह टिब्बी ने बताया कि वेरका डेयरी को पहले चरण में 2 करोड़ 28 लाख रुपए की वित्तीय सहायता ग्रांट के तौर पर जारी की गई है। इसके अलावा एन.डी.डी.बी. ने डेयरी को 2 करोड़ 46 लाख रुपए का बिना ब्याज का लोन देने की मंज़ूरी दी है, जिसे इस प्लांट के विकास

कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा। जारी ग्रांट से डेयरी में 45 नए बल्क मिल्क कूलरों की खरीद की जाएगी, इससे दूध कैनलेस होगा। डेयरी की ट्रांसपोर्टेशन घटेगी और चिलिंग सिस्टम मज़बूत होगा। 90 नई मिल्क टेस्टिंग मशीनों की खरीद की जाएगी, जिन्हें बी.एम.सी. पर फिट किया जाएगा, ताकि दूध की टेस्टिंग मौके पर की जा सके। इसके साथ ही वेरका डेयरी में ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किए जाएंगे, जिसमें कर्मचारियों के साथ-साथ दूध उत्पादकों को ट्रेनिंग दी जाएगी।

डेयरी में रोज 75 हज़ार लीटर दूध की खपत

वेरका डेयरी फिरोज़पुर के साथ अब तक 6000 से अधिक दूध उत्पादक सीधे तौर पर जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त 268 दूध उत्पादक सभाएं व 233 कमर्शियल डेयरी संचालक भी जुड़े हैं। इन सबके चलते अब तक वेरका डेयरी में प्रति दिन करीब 75 हज़ार लीटर दूध की खपत हो रही है। एन.डी.डी.बी. की प्रदान की गई ग्रांट से डेयरी में और आधुनिक यंत्रों का उपयोग कर दूध की खपत को बढ़ाया जाएगा, जिससे और अधिक दूध उत्पादकों को अपने दूध का अच्छा भाव मिलेगा और दूध की खपत भी बढ़ सके।

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 06

तिथि : 10-02-2024

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्ठिडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher **JAGPREET SINGH**
Printed at **Vargenia Printers**, Sher-e-Punjab Market, Gaushala Road, PATIALA &
Published at Patiala for Prop. **JAGPREET SINGH**

एन.आर.आई. बूईयां वाला में लगाएगा मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट, उत्पादकों को मिलेगा लाभ

प्लांट के लगने से नौजवानों को स्वरोज़गार के अवसर मिलेंगे

पंजाब सरकार दिन प्रति दिन किसानों को कृषि के साथ-साथ सहायक धंधों के साथ जोड़ने के लिए उन्हें अपना कारोबार करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इसी कड़ी में अब एक एन.आर.आई. ने फाज़िल्का ज़िले के गांव बूईयां वाला में मिल्क प्रोसैसिंग प्लांट लगाने की घोषणा की है। इससे आस-पास के एरिया के दुग्ध उत्पादकों को बड़ा फायदा मिलेगा। वहीं, मिल्क प्रोसैसिंग प्लांट के लगने से नौजवानों को स्व:रोज़गार की प्रेरणा मिलेगी। इस प्रोजैक्ट को लेकर एन.आर.आई. ने डेयरी विकास विभाग फिरोज़पुर में अपनी रजिस्ट्रेशन करवाई है। वह जल्द मिल्क प्रोसैसिंग प्लांट लगाएगा। एन.आर.आई. नौजवान जगदीप सिंह शेरगिल व यादविंद्र सिंह की ओर से बीते दिनों ज़िला प्लानिंग बोर्ड के चेयरमैन चंद सिंह गिल व डेयरी विकास विभाग के कार्यकारी अधिकारी कपलमीत सिंह के साथ मीटिंग की गई व फिरोज़पुर में अपना कारोबार स्थापित करने की इच्छा जताई। एन.आर.आई. जगदीप सिंह ने कहा कि सरकार की ओर से हुनरमंद नौजवानों के प्रवास के रुझान को पलटने पर पूरा ज़ोर लगाया जा रहा है, जिसके चलते नौजवानों को स्वरोज़गार के मौके मुहैया करवाए जा रहा है। अब ज़िला फिरोज़पुर में मिल्क प्रोसैसिंग प्लांट लगाने का मन बनाया गया है। इसके लिए डेयरी विकास विभाग में रजिस्ट्रेशन भी करवा दी है व इसके लिए संबंधितों की ट्रेनिंग भी चल रही है ताकि जल्द से जल्द इसे शुरू किया जा सके। डेयरी विकास विभाग के अधिकारी ने बताया कि यह प्रोजैक्ट करीब 4 करोड़ रुपए का होगा, जिसमें मिल्क प्रोसैसिंग व मिल्क फूड प्रोडक्ट तैयार किए जाएंगे। इस प्लांट के लगने से ज़िले के दुग्ध उत्पादकों को काफी फायदा होगा।

इस दौरान ज़िला प्लानिंग बोर्ड के चेयरमैन चंद सिंह गिल ने कहा कि अब वह दिन दूर नहीं कि प्रदेश सरकार व नौजवान मिल कर प्रदेश की पुरातन शान को बहाल करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से प्रत्येक ज़िले में सिंगल विंडो स्थापित की गई है, ताकि उद्योगपतियों के लिए प्रवानगी की प्रक्रिया में तेज़ी लाई जा सके। सिंगल विंडो उद्योगपतियों को अपने प्रोजैक्ट को जल्दी, निर्विघ्न व बिना किसी अन्य प्रवानगी के प्राप्त करने के योग्य बना रही हैं।

फिरोज़पुर में पराली की मल्चिंग की तो आलू की पैदावार दोगुणा होने की उम्मीद

पहले एक एकड़ में पैदावार 70 क्विंटल, इस बार होगी 150 क्विंटल तक

ज़िले के दुल्चीके गांव के एक प्रगतिशील किसान ने पराली को जलाने की बजाये इस बार मिट्टी में मिला कर आलू की खेती की, तो दोगुणा होने की उम्मीद बंधी है। 54 वर्षीय अवतार सिंह के अनुसार, पहले वह एक एकड़ में 15 से 17 क्विंटल आलू बीज की बुवाई करता था, जिस पर करीब 18 से 20 हज़ार रुपए खर्च आता था। वह खेतों में आलू की फसल को तैयार करने के लिए 5 बोरी डी.ए.पी., 7 से 8 स्प्रे व 6 से 8 बोरी यूरिया इस्तेमाल करता था। इस तरह एक एकड़ में करीब 50 हज़ार रुपए खर्च आता था और आलू की पैदावार 60 से 70 क्विंटल होती थी, जिससे 50 से 60 हज़ार रुपए की आमदनी हो रही थी। इस बार पराली को ज़मीन में मिलाने के बाद 15 से 17 क्विंटल आलू का बीज बोया और फसल तैयार करने के लिए मात्र 2 बोरी डी.ए.पी., 3 स्प्रे व 3 बोरी यूरिया का इस्तेमाल किया। इससे एक एकड़ में 150 क्विंटल से अधिक पैदावार होने की उम्मीद है। उसकी फसल प्रति एकड़ कम से कम सवा लाख रुपए की होगी। रेट अच्छा मिला तो डेढ़ लाख रुपए भी मिल सकते हैं।

किसान अवतार सिंह के मुताबिक जितना पैसा डी.ए.पी., स्प्रे व यूरिया से बचा, उतना ही पैसा पराली को ज़मीन में मिलाने में लगा। इसके लिए पहले कंबाइन से फसल की कटाई की गई, फिर मल्चिंग, उसके बाद प्लाओ चलाए गए, फिर रोटावेटर व अंत में लेवल कराहा लगाकर ज़मीन का लेवल किया गया। इस तरह एक एकड़ में करीब 10 हज़ार रुपए खर्च आया। खैर, बेशक मेहनत ज्यादा हुई है, खर्च भी बराबर हुआ, मगर फसल की पैदावार भी बंपर होगी।

इस बार प्रत्येक बेल के नीचे 15 से 18 आलू निकल रहे हैं, जबकि पहले 5 से 7 आलू निकलते थे। उन्होंने अन्य किसानों को संदेश दिया कि वे पराली को जलाने की बजाय ज़मीन में मिलाएं, जिससे ज़मीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और पैदावार भी दोगुनी होगी, यानी कमाई दोगुनी।

उसने कहा कि इस बार मेहनत ज्यादा हुई है। वह बेहद खुश है कि उसकी ज़मीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ गई है। खेत में थोड़ी मेहनत ज्यादा, खर्चा बराबर और पैदावार ढाई गुणा होने से अब किसान लोगों को इस तरह पराली को ज़मीन में मिला कर खेती करने के लिए प्रेरित कर रहा है। बढ़िया बात यह है कि वह पिछले 8 साल से पराली को जलाने की बजाय बेच रहे थे।

शहद को सहायक धंधा बनाया, धीरे-धीरे आगे बढ़ाया, अब कर रहे हैं मोटी कमाई

मल्टी फ्लावर, बेरी, टाहली, सरसों, सफेदा, सूरजमुखी और लीची के फूलों से तैयार करते हैं शहद

ज़िला पटियाला के नाभा के गांव कल्ला माजरा में 2 सगे किसान भाई खेती के साथ मधुमक्खी से शहद तैयार कर अच्छा मुनाफा कमा रहे है। किसान रणधीर सिंह ने बताया कि वह करीब 15 साल से शहद का कारोबार कर रहे है। वो इस समय मल्टी फ्लावर्स, बेरी, टाहली, सरसों, सफेदा, सूरजमुखी और लीची फूलों से शहद तैयार करते है। मधुमक्खी के एक बॉक्स से 10-25 किलो शहद सालाना निकलता है। इस शहद का मूल्य 100 से 500 रुपए है। ऐसे में अच्छी खासी कमाई हो जाती है। रणधीर सिंह ने कहा कि उनके चाचा संगरूर के धूरी में 25 साल से मधुमक्खी शहद पालन का सहायक धंधा कर रहे है। वह कई बार मधुमक्खियों के दो बॉक्स उनके खेलों में लगे आम के पेड़ के नीचे रख जाते थे। उन्हें देख कर दोनों भाईयों ने कृषि विज्ञान केन्द्र, रौणी (पटियाला) और बागवानी विभाग से इस धंधे की ट्रेनिंग ली। विभाग करीब चार हज़ार रुपए का एक मधुमक्खी का बॉक्स उपलब्ध करवाता है। इस पर 35 फीसदी सब्सिडी मिलती है। कुल मिला कर 50 बॉक्स करीब दो लाख रुपए के खर्चे में तैयार हो जाते है। दोनों भाईयों ने 10 बॉक्स से यह धंधा शुरू किया। कमाई देख धीरे-धीरे बॉक्स बढ़ाए और अब उनके पास करीब 300 बॉक्स है।

दूसरे राज्यों में भी जाना पड़ता है

इस काम में दूसरे राज्यों में भी जाना पड़ता है। सरसों की फसल राजस्थान में ज्यादा होती है। वह नवम्बर-दिसम्बर में वहां चले जाते है। फरवरी तक वह सरसों का शहद इकट्ठा करते है। ऐसे में मल्टी फ्लावर्स, बेरी, टाहली, सरसों, सफेदा, सूरजमुखी और लीची फूलों के शहद के लिए वह अलग-अलग राज्यों में जाकर काम करते है। रणधीर सिंह के मुताबिक दिक्कत सिर्फ मार्केटिंग की है, क्योंकि सरकार शहद की खरीद नहीं करती है। प्राइवेट कम्पनियां उनके पास आकर शहद खरीदती है। अब यह धंधा मौसम पर ज्यादा निर्भर करता है। जैसे साल 2024 में जनवरी में 11 दिन में धूप नहीं निकली है। मधुमक्खी ठंड के मौसम में बाहर नहीं आती। उनका काम इस मौसम में शून्य के बराबर है। वह पहले से तैयार शहद को अलग-अलग शहरों में जाकर बेचते है।

बागवानी में ज्यादा ना हो जाए पानी!

अतिवृष्टि के बारे में हम जानते हैं, जो खेती को नुकसान पहुंचाती है। उसी तरह से ज़रुरत से ज्यादा पानी बगीचे के लिए भी नुकसानदायक हो सकता है। बचाव के लिए क्या सावधानियां ज़रुरी होंगी, जानिए।

पौधों की जड़ों को पनपने के लिए पानी और ऑक्सीजन के संतुलन की आवश्यकता होती है और जब बहुत अधिक पानी होता है, तो वे पनपने की बजाय खराब होने लगते हैं। आप भी जानिए कि कहीं आप भी अपने पौधों को ज़रुरत से ज्यादा पानी तो नहीं दे रहे, जो उनके लिए नुकसानदायक साबित हो रहा हो?

मिट्टी हमेशा गीली रहती है

पौधों में ये सोच कर पानी ना दें कि पानी उसके लिए ज़रुरी है, तो दिन में कभी भी दे सकते हैं। ऐसा करने से पानी मिट्टी में बैठता जाता है और पौधे को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती। अगर कुछ दिन पहले पानी दिया है और मिट्टी फिर भी नम लग रही है, तो पानी की निकासी पर ध्यान दें। ऐसा ना हो कि पानी मिट्टी में जमता जाए और पौधा खराब होता जाए या उसकी जड़ें सड़ने लगें।

पीली पड़ रही हैं पत्तियां

पीली पत्तियां अधिक पानी के मुख्य लक्षणों में से एक है। मुश्किल यह है कि पर्याप्त पानी ना होने पर भी पत्तियां पीली हो सकती है। सही कारण पता लगाने के लिए उंगलियों को मिट्टी पर रखें और दबा कर देखें। अगर मिट्टी चिपक रही है या उसमें नमी महसूस हो रही है तो पत्तियां पीली होने

का कारण पानी की अधिकता है। इसलिए कुछ दिन पानी ना दें।

मिट्टी में फंगस लगना

यह निश्चित रूप से एक अच्छा संकेत नहीं है, क्योंकि फंगस ऐसे वातावरण में पनपती है, जो लगातार नम रहते हैं। इस कारण मिट्टी तो खराब होती है, पौधे को भी नुकसान होता है। इसलिए मिट्टी में सूखापन लगने पर ही पानी दें। इसके अलावा हो सके तो गमला बदल दें और नई मिट्टी में पौधा लगाएं।

पत्तियों के किनारे भूरे रंग के होना

ऐसा अक्सर देखा जाता है कि पत्तियों की किनारियां सूखने लगती हैं या भूरे रंग की हो जाती हैं। पानी की अधिकता होने पर पत्तियों की कोशिकाएं अतिसंतृप्त (ओवर सैचुरेटेड) होकर फट जाती हैं, जिससे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। हां अगर पत्तियां भूरी होने के साथ-साथ मुलायम हैं, तो पानी की मात्रा अधिक है। वहीं भूरा हिस्सा छूने पर कड़क है या टूट रहा है, तो पानी की कमी इसका कारण है।

पत्तियों में कीड़े लगना

यह भी अधिक पानी होने का मुख्य कारण है। अगर आपके पौधे में कीड़े लग रहे हैं, तो गमले को हिला कर देखें या एक किनारे से मिट्टी हटा कर देखें, ताकि पौधे की जड़ें दिख जाएं। यदि अधिक पानी की समस्या है, तो जड़ें गहरे रंग की दिखेंगी और छूने पर मटमैली महसूस होंगी। इसके साथ ही मिट्टी से अजीब-सी गंध भी आ सकती है।

धीमी गति से विकास होना

पत्तियों के पीलेपन के साथ धीमी गति से बढ़ना भी एक लक्षण है। यदि आपके पौधों में पीली पत्तियां और पुरानी पत्तियां हैं, साथ ही साथ नई पत्तियां भी गिर रही हैं, तो आप पौधे को अधिक पानी दे रहे हैं।

इसके अलावा कलियां ना खुल रही हों, तो भी यह बहुत अधिक पानी का संकेत है।

हम मुश्किल से कैसे बचें?

- अपनी मिट्टी की नियमित जांच करें। नमी की जांच के लिए अपनी उंगली को मिट्टी में लगभग एक या दो इंच नीचे डाल कर देखें। यदि मिट्टी नम महसूस होती है, तो पौधे को पानी देना कम करें। कुछ दिन के अंतराल में पानी दें।

- हर पौधे की अलग-अलग पानी की ज़रुरत होती है। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आपके किस पौधे को कितना पानी चाहिए। इसके लिए पौधा लेते समय ही इस बारे में जानकारी ले लें।

- आजकल मॉइश्चर मीटर भी आते हैं। बस उन्हें मिट्टी में डालें और यह आपको बता देते हैं कि मिट्टी में कितना पानी है। इसकी मदद से आप जान सकेंगे कि पौधे को पानी की आवश्यकता है या नहीं।

- गमले में सिर्फ मिट्टी ही ना डालें, बल्कि साथ में ड्रेनेज स्टोन्स (छोटे पत्थर या रेत) भी डालें। इससे मिट्टी चिपकेगी या जमेगी नहीं और उसमें हवा बनी रहेगी।

- गमले में मिट्टी भरते समय नीचे छोटे-छोटे पत्थर रख दें। इससे जड़ों को पर्याप्त हवा मिलती रहेगी और पौधा खराब नहीं होगा।

- कुछ पौधों जैसे एलोवेरा, स्नेक प्लांट, जेड प्लांट, फर्न आदि पौधों को कम पानी की आवश्यकता होती है।

- कमरे में रखे पौधों को कुछ देर के लिए धूप ज़रुर दिखाएं। इससे पौधों की बढ़त अच्छी होती है। साथ ही अधिक पानी के कारण खराब होने वाले पौधे भी धूप के प्रभाव से ठीक होने लगते हैं।

- आजकल स्प्रिंकलर का इस्तेमाल भी किया जाता है। घर में क्यारी वाला बागीचा है, तो स्प्रिंकलर सिस्टम का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके सभी पौधों को सही मात्रा में पानी मिलता है।

प्रहलाद देवरहुबली,
बागवानी विशेषज्ञ

जायद में मूंगफली उत्पादन

सर्वेश कुमार और आर.सी.शर्मा, वैज्ञानिक, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, जिला हरदा–461331 (मध्य प्रदेश)

गतांक से आगे

अंतरासस्य क्रियाएं एवं खरपतवार नियंत्रण :- जायद की अपेक्षा खरीफ मौसम में खरपतवार आदि के फसल को अधिक नुक्सान पहुंचता है। इसमें निराई-गुड़ाई जल्दी कर देनी चाहिए। बुवाई के 30-35 दिनों के समय ही फसल को खरपतवाररहित कर देना चाहिए। इस समय खरपतवार से 80 प्रतिशत तक फसल को नुक्सान हो जाता है। साथ ही समय पर इसमें मिट्टी चढ़ाने का कार्य भी कर देना चाहिए। इससे सुइयां क्रियाशील रहती हैं। फसल में सुइयां बनना प्रारंभ होने तक निराई-गुड़ाई इत्यादि सभी कार्य पूर्ण कर लेने चाहिए। बाद में सुइयां खराब होने का खतरा रहता है। साथ ही समय-समय पर सिंचाई एवं पौध संरक्षण कार्य करते रहना चाहिए।

जायद में जहां खरपतवार अधिक होते हैं। वहां उनके नियंत्रण के लिए निम्नलिखित खरपतवारनाशियों का छिड़काव करना चाहिए।

*** बुवाई से पहले :-** फ्लुक्लोरालिन 45 प्रतिशत ई.सी. का 0.5-1.00 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव कर तुरंत भूमि में मिला देना चाहिए।

*** अंकुरण से पहले :-** एलाक्लोर 50 ई.सी. या 10 प्रतिशत जी (दानेदार) का 1-1.5 कि.ग्रा. नाईट्रोजन का 0.25-0.75 कि.ग्रा., पेंडिमेथालिन 30 प्रतिशत ई.सी. या 5 प्रतिशत जी (दानेदार) का 1-1. 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि उपचारित करें।

*** अंकुरण के बाद :-** इमेजेथापिर 10 प्रतिशत एस.एल. 0.1-0.2 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से लगभग 5-25 दिनों के दौरान एक बार छिड़काव कर भूमि उपचारित करना चाहिए।

मूंगफली की खुदाई :- जब पौधों की पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगे एवं फल्लियों के अंदर का टैनिन का रंग उड़ जाए तो खेत में हल्की सिंचाई कर खुदाई कर लें एवं पौधों से फल्लियों को अलग कर लें।

मूंगफली का क्षेत्र

भारत, मूंगफली उत्पादन एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान पर है। देश में इसके कुल उत्पादन का 81 प्रतिशत भाग तेल निकालने में, 12 प्रतिशत बीज के रूप में, 6 प्रतिशत खाद्य के रूप में एवं शेष 01 प्रतिशत निर्यात में उपयोग किया जा रहा है। मूंगफली निर्यात करने वाले देशों में भी भारत अग्रणी देश है। इसके कुल उत्पादन एवं क्षेत्रफल का लगभग 91 प्रतिशत भाग केवल गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं पंजाब आदि राज्यों में बिखरे हुए है। इसके कुल क्षेत्रफल के लगभग 87.7 प्रतिशत भाग पर खरीफ मौसम में एव शेष भाग पर जायद मौसम में मूंगफली उगाई जाती हैं। मूंगफली उत्पादन में मध्य प्रदेश का देश में छठा स्थान है। यहां कुल 202 हजार हैक्टेयर क्षेत्र से 302 हजार क्विंटल मूंगफली उत्पादन होता है। मध्य प्रदेश की उत्पादकता 1497 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर है। मध्य प्रदेश में मूंगफली उत्पादन मालवा के पठार एवं नर्मदा घाटी के मुख्य जिले मंदसौर, धार, रतलाम, खरगोन, झाबुआ, बेतुल, छिंदबाड़ा, उज्जैन, राजगढ़ व शांजापुर इत्यादि में होता है।

राईजोबियम कल्चर से बीजोपचार

राईजोबियम कल्चर से बीजों को उपचारित करने के लिए 2-5 लीटर पानी में 300 ग्राम गुड़ डालकर और उसे गर्म करके एक घोल तैयार कर लें। फिर घोल को ठंडा करके उसमें 600 ग्राम राईजोबियम जीवाणु मिलाएं। यह घोल एक हैक्टेयर में बुवाई करने वाले बीज के लिए पर्याप्त होता है। इस घोल की बीजों पर समान परत हाथों द्वारा धीरे-धीरे मिलाकर चढ़ानी चाहिए। इसके बाद फॉस्फेट विलेय जीवाणु कल्चर से उपचारित करते हैं। उपचारित बीजों को छायादार स्थान में सुखाकर शीघ्र बुवाई के लिए प्रयोग करें। ऐसा करने से मूंगफली के उत्पादन में 12-15 प्रतिशत तक उपज बढ़ जाती है। फॉस्फेट विलेय जीवाणु से मृदा

में उपस्थित अघुलनशील फॉस्फोरस, घुलनशील फॉस्फोरस के रूप में उपलब्ध हो जाता है। इसे पौधे आसानी से ग्रहण कर लेते हैं। परिणामस्वरूप उत्पादन में बढ़त एवं दानों में चमक एवं सुडौलता भी बढ़ती है। इसकी वजह से बाजार में अच्छा मूल्य प्राप्त होता है।

मूंगफली उत्पादन में हार्मोन्स का उपयोग

मूंगफली में हार्मोन्स का उपयोग निम्न तीन समस्याओं के कारण किया जाता है:

* संपूर्ण फसलकाल में फूल निकलते रहना।

* मूंगफली में सुइयों की परिपक्वता अवस्था का 50 प्रतिशत तक निर्माण होना।

* परिपक्व अवस्था में नमी मिलने पर परिपक्व फल्लियों का अंकुरण होना।

पौधों की 50 प्रतिशत शक्ति अर्द्धपरिपक्व फल्लियों के उत्पादन तथा परिपक्व फल्लियों के अंकुरण में नष्ट हो जाती हैं। इन दोनों अवस्थाओं के कारण मूंगफली की प्रति हैक्टेयर उत्पादन एवं गुणवत्ता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए प्रभावित फल्लियों की संख्या प्रति इकाई उत्पादन, परीक्षण वजन इत्यादि को बढ़ाने तथा समकालिक पुष्पन के लिए एन.ए.ए. नामक हार्मोन का उपयोग किया जा सकता हैं। मूंगफली में हार्मोस उपयोग के लिए उपयुक्त समय बुवाई के लगभग 40वें एवं 80वें दिन पर आदर्श होता है और 20 पी.पी.एम. सांद्रता वाला घोल अधिक प्रभावी रहता है। हर्मोन्स की अधिक सांद्रता वाले घोल की अपेक्षा निम्न सांद्रता वाले घोल का छिड़काव करना अधिक प्रभावी होता है। मूंगफली में फल्लियां अंकुरण होने की भी समस्या होने के कारण इसमें मैलिक हाईड्रोजाईड (एम.एच.) अम्ल का उपयोग प्रसुप्त अवस्था पैदा करने के लिए किया जाता है। इसमें लगभग 20-30 दिनों तक पानी मिलने पर भी फल्लियां अंकुरित नहीं होती हैं। सिंचाई करके शुष्क खेत से भी मूंगफली की खुदाई की जा सकती है। इसका व्यावसायिक स्तर पर कम उपयोग होता है।

भंडारण : भंडारण में पूर्व पके हुए दानों में नमीं की मात्रा 8-10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। अन्यथा अधिक नमीं होने पर मूंगफली में पीली फफूंद (एस्परजीलस फ्लेवस) द्वारा एफ्लॉटाक्सिन नामक विषैला तत्व पैदा हो जाता है। यह मानव व पशु आदि के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। यदि मूंगफली को तेज धूप में सुखाया जाता है तो अंकुरण क्षमता का ह्रास होता है। इसलिए अंकुरण क्षमता को बनाए रखने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

* उपयुक्त नमीं होने पर ही मूंगफली को जमीन से निकालें ताकि मूंगफली भूमि में ना रहे।

* मूंगफली को भूमि से निकालने के बाद इसके पौधों को उल्टा करके, छोटे-छोटे गट्ठा बनाकर छायादार स्थान में सुखाना चाहिए।

* जब मूंगफली सूख जाए तो उसको पौधों से अलग कर उनकों 8-10 प्रतिशत नमीं रहने तक और सुखाना चाहिए।

* पूर्णतया सूखी फल्लियों को हवादार क्षेत्र में भंडारित करना चाहए। जहां पर नमीं ग्रहरण नहीं कर सकें या फिर प्रत्येक बोरे में कैल्शियम क्लोराईड 300 ग्राम प्रति 40 कि. ग्रा. बीज की दर से डालकर भंडारण करें।

* भंडारण के समय हानि पहुंचाने वाले कीट-पतंगों से सुरक्षा रखें, जिससे भंडारण के समय फल्लियां खराब न हों।

संतरा फसल प्रबंधन एवं उत्पादन

भारत में संतरा मुख्य रूप से महाराष्ट्र के नागपुर यवतमाल वर्धा बुलढाना एवं विदर्भ को लगते छिन्दवाड़ा जिले के पांढूरना सौसर तहसील में संतरे की फसल ली जाती है एवं देश में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में भी संतरे का उत्पादन लिया जाता है।

रेवानन्द निकाजु, राष्ट्रीय सचिव, किसान हैल्प किसान यूनियन, मु. वो. वाडेगाव तह. पांढुरना, जिला छिन्दवाड़

संतरे की प्रजातियां : मुख्य रूप से हमारे देश में नागपुरी संतरा तथा किन्नो जाती के संतरे की फसल ली जाती है।

नागपुरी संतरा : इसका आकार गोल चमकदार पकने पर नारंगी एवं भरपुर रसदार होता है।

परिपक्व संतरे का व्यास 6 सैंटीमीटर से 8 सैंटीमीटर तक होता है संतरा छिलने के बाद एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। इसी गुण के कारण संतरा देश में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है।

किन्नो संतरा : मुख्य रूप से पंजाब हरियाणा राज्य में इसकी फसल ली जाती है। फल का वजन 225 ग्राम तक होता है।

फल का रंग आर्कषक एवं स्वाद में नागपुरी संतरे से खट्टा होता है, इसकी छाल मोटी होने दुर के मार्किट में भेजने के लिए उत्तम होता है।

खेत की तैयारी : पौधे लगाने के लिए गहरी काली मिट्टी या रेत मिश्रित वालुकामय खेत संतरे के लिए अच्छा होता है।

पौधे लगाने के लिए ग्रिष्म काल में एक माह पहले भारी जमीन पर 18×18, हल्की जमीन पर 15×15 फीट पर मार्क करके 1.5×1.5×1.5 इंच के गड्ढे खोद कर उसे एक माह तक वैसे ही छोड़ दें जिससे धुप में हानिकारक किट मर जाए। उसके पश्चात् 40 किलो सड़ी गोबर की खाद या उपजाऊ मिट्टी 7 किलो नीम की सड़ी खाद 1 किलो सुपर फास्फेट एवं 50 ग्राम कीटनाशक पाउडर के मिश्रन से गड्ढे भर देते हैं। पौधे लगाते समय जमीन से 3 इंच पौधे की आंख रहे इस बात का ध्यान रखे हमारे देश में पौधे जुन से दिसम्बर तक लगाए जाते है।

सिंचाई निदाई गुड़ाई : पौधे लगाने के बाद पौधे को पानी देना चाहिए। एक माह तक आवश्यकतानुसार पानी दें। पौधे के लिए सबसे अच्छी विधि टपक सिंचाई है। हमारे क्षेत्र में अधिकांश बगीचे टपक सिंचाई से सिंचित होते है। एक वर्ष से बड़े पौधे को ठंड के मौसम में 15 दिन में एवं ग्रीष्मकाल में 5 से 8 दिन में सिंचाई करना चाहिए। खेत में बरसात का पानी संचय न हो इसका ध्यान रखना चाहिए।

पौधे को आकार देना : पौधे को प्रारंभिक अवस्था में उचित आकार देने के लिए उसकी कटिंग करना आवश्यक है। जमीन से 1.5 फिट से 3-4 टहनियां रखनी चाहिए। नीचे कि कांटे वाली टहनियां हमेशा निकालते रहना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक : अच्छी फसल लेने के लिए बगीचों को समय पर खाद एवं उर्वरक देना चाहिए जिसमें गोबर की खाद प्रति एकड़ 40 किलो तक देना चाहिए। साथ में नीम की खली 3 से 5 किलो तक देना चाहिए एवं 600 ग्राम नाइट्रोजन एवं 400 ग्राम फास्फेट 400 ग्राम पोटाश वर्ष में इसे 3 बार देना चाहिए एवं सुक्ष्म पोषक तत्व 250 ग्राम तक देकने चाहिए। संतरे में ताजे गोबर को 200 लीटर के ड्रम 60 किलो का गोबर 500 ग्राम रायजोबियम 500 ग्राम 1 किलो ट्राईकोडर्मा 2 किलो गुड़ एवं 2 किलो सोयाबीन, चना, उड़द, ज्वार का आटा 4 दिन सड़ाने के बाद सिंचाई के वक्त देने से अच्छे नतीजे दिखते है। यह वर्ष में 2 से 3 बार एक एकड़ में देना चाहिए। वर्ष में 2 बार बोर्डा पेस्ट लगाना चाहिए या 20 ग्राम कॉपर आवसीफलोराईड के साथ 30 नुवान 10 लीटर पानी मिला केर तने पर छिड़काव करना चाहिए जिससे कीड़े नही लगते।

बहार पकड़ना : संतरे को 3 बहार मुख्य रूप से आती है।

जुलाई से अगस्त 'मृग', सितंबर से अक्तूबर 'हस्त' एवं फरवरी से मार्च 'अंबियां'। हमारे देश में मृग में जिनके पास सिंचाई की व्यवस्था है वह अंबिंयो बहार लेत है। बहार लेने के लिए पौधे 5 से 7 वर्ष में उत्पादन लेने लायक हो जाते है। बहार लेने के लिए पौधें को 1 से 1.5 माह तक आराम की जरूरत होती है। आराम का मतलब कौन से मौसम में फसल लेनी है, उस हिसाब से पौधे को 1 से 1.5 माह पहले पानी देना बंद कर देते है। जिससे पौधे में फसल देने वाली टहनियों में अन्न का संचय हो जाता है एवं उस पर फूल आने लगते है। पौधे में फूल दिखने के बाद प्लानोफिक्स 13.00.45 उर्वरक 20 ग्राम कार्बोन्डाजीम 20 ग्राम का घोल 10 लिटर पानी में बनाकर छिड़काव करना चाहिए। जिससे फूल नही गिरते।

प्रमुख कीट एवं रोग लक्षण तथा उपाय: संतरे पर सफेद मक्खी, माहु, सिट्स सिल्ल, लिफ माइनर, फल माईटस तने का कीड़ा, निमेटोडस, कैंकर फाइटोथ्योरा, डायबैक, गोमोसीस एवं सफेद मक्खी। यह हल्के पीले रंग की होती है एवं पत्तों का रस चुसती है।

काली मक्खी : यह पत्तों का रस चुसती है एवं समय पर नियंत्रण नहीं किया तो पौधे कि सभी टहनियां काली हो जाती है। हमारे देश में इसे कोलसी कहते है।

सिट्स सिल्ला : वह नई कोमल पत्तों का रस चुसती है एवं एक मीठा द्रव छोड़ती है जिससे फफूंद उत्पन्न होती है।

लिंफ माइनर : यह छोटा किट होता है जो पत्तियों में सुरंग बनाकर रहता है।

उपचार: उपरोक्त कीटों का समय पर नियंत्रण करना जरूरी है।

इसके लिए मोनोक्रोटोफॉस 30 मिलीलीटर या ट्रायजोफास 30 मिलीलीटर या एसीफेट 30 ग्राम या टाटामिडा 10 मिलीलीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

फल कीड़ा : यह पके फलों में सुंड से छेद करते है जिससे फल पीले होकर गिर जाते है जिससे नुकसान होता है।

उपचार : डायक्लोरोवास या नुवान 30 मिलीलीटर पानी के समय छिड़काव करना चाहिए एवं खेतों में धुवा करना चाहिए बाजार में फल मक्खी के लिए ट्राप आते है वह लगाने चाहिए बगीचा खरपतवार मुक्त रखना चाहिए।

डायबैक : शुरूआत में पौधे के पत्ते पिले पड़ जाते है एवं टहनियां ऊपर से सुखती है। समय पर उपचार नहीं किया तो पौधा पुरा सुख जाता है।

उपचार : पौधे की सुखी टहनियां काट लेनी चाहिए एवं कापर आक्सीक्लोराइड या रेडोमिल का छिड़काव करना चाहिए तथा रोगग्रस्त पौधे कि जड़ें खुली करके उपरोक्त दवाई पानी में मिलाकर डालनी चाहिए।

गमोसिस : यह तने में जख्म, अन्नद्रव की कमतरता जिवाणु विषाणु से यह रोग होता है जिससे तना फट जाता है। एवं एक चिपचिपा द्रव रिसता है। जिससे पौधो कमजोर होता है।

उपचार : पौधे तने में जख्म से द्रव का रिसाव देखते ही साफ करके एरंडी के तेल में रेडोमील या मलहम लगाने से रिसाव बंद हो जाता है पौधे को वर्ष में 2 बार बोर्डा पेस्ट लगाना चाहिए।

कैंकर : भयानक रोग का प्रकोप फल एवं पत्तियों में दिखाई देता है। शुरूआत में पत्तों के निचले भाग में लक्षण प्रगट होते है जिससे पीले भुरे रंग के धब्बे दिखाई देते है जिससे पत्तियां पीली पड़ कर गिर जाती है। फल धब्बे खुरदरे भुरे रंग के छिलके की गहराई तक होते है। जिससे छिलके फट जाते है।

उपचार : बरसात में कार्बेन्डाजीम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए एवं बवब 3 ग्राम स्ट्रोसाइक्सीन 1 ग्राम 10 लीटर पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

फलों को तोड़ना : संतरे से 6 से 8 माह में पके हो जाते है। प्रति पौधा अच्छी तरह बगीचे की देखभाल कि जाए तो 250 से 1500 फल प्रति पौधा उत्पादन मिलता है।

संतरा पौधे की उपलब्धता : संतरे के पौधे हमारे क्षेत्र में जुन से सितंबर तक उपलब्ध रहते है। संतरे पौधे की मंडी के रूप में महाराष्ट्र में शेंदुरदना घाट तहसील वरूड जिला अमरावती से हर वर्ष दूसरे प्रदेशों में लाखों पौधे किसान ले जाते है या हमसे संपर्क करने पर उत्तम दर्जे के पौधे उपलब्ध करवाने में हम मदद कर सकते हैं।

मोटा अनाज ज्वार के औषधीय गुण

सरोज रानी, यूनिवर्सिटी बायोटैक्नोलॉजी संस्थान, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली
ललिता व विशाल गांधी, सहायक वैज्ञानिक, चावल अनुसंधान संस्थान
(चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय), कौल–136021

ज्वार को दुनिया में उगाई जाने वाली पांचवीं सबसे महत्वपूर्ण अनाज की फसल के रूप में जाना जाता है। ज्वार 5000 वर्षों से भी अधिक समय तक मानव आहार का एक हिस्सा रहा है, इसके उपयोग का दुनिया भर में कई सभ्यताओं के माध्यम से पता लगाया जाता है। मनुष्यों के लिए उपयोग के अलावा, ज्वार चारा पौधों को मवेशियों के लिए चारे के रूप में भी उपयोग किया जाता है। 100 ग्राम शर्बत में लगभग 72 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन 11, 53.8 मिलीग्राम कैल्शियम, 8.4 मिलीग्राम लोहा, 551 मिलीग्राम फास्फोरस, 672 मिलीग्राम पोटाशियम और 11.5 मिलीग्राम सोडियम पाए जाते हैं। शर्बत में थायमिन, नियासिन और राइबोफ्लेविन, आहार फाइबर व खनिज जैसे विटामिन भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

* ज्वार के दानों में एक चोकर की परत होती है, जिसमें दुर्लभ एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो शर्बत अनाज कैंसर (एसोफैगन कैंसर) को रोकने में मदद कर सकता है।

* ज्वार में उच्च आहार फाइबर पाचन तंत्र को भोजन की गति को पूरी तरह से सुचारू रखने में मदद करता है। यह सूजन, ऐंठन, अतिरिक्त गैस, कब्ज, दस्त और सामान्य पेट में दर्द को रोकता है।

* ज्वार में फाइबर की उच्च मात्रा शरीर में एल.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल या खराब कोलेस्ट्रॉल को दूर करने में मदद करती है। यह शरीर को कई हृदयाघात जैसे दिल के दौरे, स्ट्रोक और धमनीकला काठिन्य से बचा सकता है।

* ज्वार का चोकर टैनिन से भरपूर पाया जाता है, जो एंजाइमों को गुप्त करता है, जो शरीर में शर्करा और स्टार्च के अवशोषण को कम करता है। यह शरीर में ग्लूकोज और इंसुलिन के स्तर को नियंत्रित करके मधुमेह जैसी बीमारियों को रोकने में मदद करता है।

* जिन लोगों को ग्लूटेन से एलर्जी है, उनके आहार में गेहूं के लिए ज्वार के दाने अद्भुत विकल्प बनाते हैं। इस एलर्जी से सीलिएक रोग हो सकता है, जो एक ऑटो-प्रतिरक्षा रोग है। यह सूजन, मतली और गंभीर आंतों की क्षति से शरीर को राहत देता है, जो लस एलर्जी के मामलों में पैदा कर सकता है।

* ज्वार में कैल्शियम और मैग्नीशियम के स्त्रोत पाए जाते हैं, दोनों खनिज आपकी हड्डियों के विकास और ताकत के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं, अस्थि ऊतक के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, उम्र बढ़ने वाली हड्डियों की ताकत का रख-रखाव करते हैं और गठिया और ऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारियों को रोकने में भी मदद करते हैं। मैग्नीशियम तत्व आपके शरीर में कैल्शियम के स्तर को नियंत्रित और बनाए रखता है।

* नियासिन (विटामिन बी3) भोजन को शरीर द्वारा प्रयोग करने योग्य ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करने का एक अभिन्न अंग है। यदि शरीर टूट जाता है और पोषक तत्वों को ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है, तो यह शरीर में अचानक स्पाइक्स और फॉल्स के बजाये पूरे शरीर में पूरे दिन ऊर्जा के स्तर को स्थिर रखता है।

* ज्वार में तांबा और लोहा दो मुख्य खनिज हैं। शरीर में रक्त परिसंचरण को बेहतर बनाने के लिए तांबा और लोहा एक साथ काम करते हैं। तांबा शरीर में लोहे के अवशोषण को बढ़ाता है, लाल रक्त कोशिकाओं के विकास को बढ़ाता है, सेलुलर विकास और मुरम्मत को उत्तेजित करता है और एनीमिया की संभावना को भी कम करता है।

* ज्वार के दाने की चोकर परत में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कैंसर की रोकथाम के इलाज में मदद करते हैं। ज्वार का प्रभाव त्वचा पर कोशिकाओं वाले वर्णक के विकास को रोक कर मेलेनोमा को रोकने में भी प्रभावी है।

ए.के. सिंह, जनेकृविवि, कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर (मध्य प्रदेश), जय सिंह, जनेकृविवि, कृषि विज्ञान केन्द्र, सिंगरौली (मध्य प्रदेश), ए.के. त्रिपाठी, कृषि विज्ञान केन्द्र सागर (मध्य प्रदेश)

मूंग से कम लागत में अधिक लाभ

मूंग की फसल कम समय (60 से 70 दिन) में पककर तैयार होने के कारण संघन फसल प्रणाली के लिए भी उपयुक्त है। फलियों की तुड़ाई के बाद इसकी हरी खाद भी बनाई जा सकती है। इससे मृदा में जीवांश कार्बन व पोषक तत्वों की उपलब्धता में बढ़ोतरी होती है एवं मृदा स्वास्थ्य बेहतर होता है। मूंग की पकी हुई फसल से दाना निकालने के उपरांत भूसा बहुत ही पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होता है, जिसको पशु बड़े ही चाव से खाते हैं।

भूमि का चुनाव व तैयारी : हल्की रेतीली दोमट या मध्यम प्रकार की मृदा, जिसका पी-एच मान 7-8 के मध्य व जल निकास की समुचित व्यवस्था हो, मूंग की खेती के लिए उपयुक्त है। दो-तीन बार हल या कल्टीवेटर चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा कर पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए।

बीज की मात्रा व उपचार : बीज शुद्ध, प्रमाणित व रोगमुक्त होना चाहिए। भंडारित बीज को साफ करके, अंकुरण परीक्षण करने के बाद बोने के लिए उपयोग में लाना चाहिए। बुआई के लिए उन्नत किस्मों का 8-10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करना चाहिए। बुआई से पूर्व बीज को मिश्रित फफूंदनाशी-कार्बेन्डाजिम + मैन्कोजबे की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित कर बोना चाहिए ताकि बीजजनित रोगों से छुटकारा मिल सके। इसके साथ ही पीला मोजेक रोग, जो कि सफेद मक्खी नामक कीट से फैलता है, के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.एस. की 2 मिलीलीटर मात्रा द्वारा प्रति किलोग्राम दर से उपचारित करना चाहिए। इसके बाद बीज को राइजोबियम कल्चर 5-10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बुआई का तरीका : मूंग की बुआई के लिए कतार से कतार के बीच की दूरी 30 सैंटीमीटर रखें, साथ ही बीज को 3-4 सैंटीमीटर की गहराई पर बोएं। जल प्रबंधन व फसल की उत्तम बढ़वार के लिए रेज्ड बेड प्लांटर द्वारा बुआई करें।

बुआई का समय : ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई 25 मार्च से 10 अप्रैल तक कर देनी चाहिए। इस अवधि के बाद बुआई करने पर पुष्पन अवस्था पर अधिक तापमान के कारण फलियां कम बनती हैं, इस कारण उपज प्रभावित होती है। खरीफ मौसम की फसल बुआई जून-जुलाई में की जाती है। बुआई से पूर्व बीज का उपचार बहुत आवश्यक है, ताकि बीज नष्ट न हों एवं प्रति इकाई क्षेत्र में वांछित पौध संख्या प्राप्त हो सके।

खाद व उर्वरक : बेहतर उत्पादन के लिए मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर खाद व उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। मूंग की फसल को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश की 20:50:20 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर मात्रा की आवश्यकता होती है। इसके लिए 40 किलोग्राम डीएपी व 13 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश अथवा 15 किलोग्राम यूरिया, 100-120 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 13 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ उपयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त 12-15 क्विंटल कम्पोस्ट प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिए। फॉस्फेट उर्वरकों जैसे डीएपी, सिंगल सुपर फॉस्फेट की तत्व उपयोग दक्षता वृद्धि के लिए पी.एस.बी. कल्चर 2 किलोग्राम प्रति एकड़ एवं माइकोराइजा 3 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से कम्पोस्ट के साथ प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाई: ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल को 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती है। शाखा एवं फलियां बनते समय तथा दाना भरते समय सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई अधिक करने से खरपतवार अधिक पनपते हैं। 15 एवं 30 दिनों के बाद खेत से खरपतवार निकालना चाहिए। खरीफ मौसम की फसल में जल भराव होने की दशा में अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकाल देना चाहिए

खरपतवार नियंत्रण : फसल एवं खरपतवार की प्रतिस्पर्धा की अंतिम अवधि बुआई के 15-30 दिनों तक रहती है। इस बीच निराई करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही भूमि में वायु का संचार होता है, जिससे पौधों की ग्रंथियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमंडलीय नाइट्रोजन एकत्रित करने में सहायता मिलती है। रासायनिक नियंत्रण के लिए बुआई के बाद तथा अंकुरण के पूर्व एलाक्लोर 50 ई.सी. 2 लीटर या पैंडिमिथलीन 30 ई.सी. 3 लीटर को 600-700 लीटर पानी में मिलाकर भूमि में छिड़काव करें। इसके बाद 25-30 दिनों की अवस्था पर निराई करें। खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए इमेजाथापर की 1.0 लीटर मात्रा अथवा इमेजाथापर + इमेजामोक्स की 75 ग्राम मात्रा का फसल की 15-20 दिनों की अवस्था पर छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख रोग:

पणधब्बा रोग: मूंग की फसल पर इसका प्रकोप होता है। इसमें पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं, जो फैलकर पूरे पौधे को झुलसा देते हैं। इसके साथ ही फफूंद रोग का प्रकोप होता है। इस रोग में पत्तियों पर सफेद चूर्ण जमा हुआ दिखता है। दोनों ही रोगों के नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम की एक ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

फफूंद रोग: इस रोग के कारण पत्तियों पर सफेद रंग का पाउडर जमा हो जाता है। नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक की 500 ग्राम मात्रा 200 लीटर पानी में अथवा 100 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पीत शिरा रोग: विषाणुजनित पीत शिरा रोग (पीला मोजेक) का प्रकोप मूंग की फसल में प्रमुखता से होता है। इससे 50 से 80 प्रतिशत तक उपज में कमी होती है। इस रोग के लक्षण बुआई के 4-5 सप्ताह बाद दिखने लगते है। सर्वप्रथम पत्तियों पर गोलाकार पीले रंग के धब्बे दाने के आकार के बनते है, जो धीर-धीरे बढ़कर हरे पीले से चकत्तों के रूप में बदल जाते हैं तथा धीरे-धीरे पूरी पत्ती पीली पड़कर सूख जाती है। रोग का प्रसार सफेद मक्खी नामक रसचूसक कीट द्वारा होता है। रोग नियंत्रण के लिए प्रतिरोधी प्रजातियों को और खेत में खरपतवार सहित रोगी पौधों को समय-समय पर निकालकर नष्ट करें। वाहक कीट सफेद मक्खी से बचाव के लिए बीज को इमिडाक्लोप्रिड 600 (48 प्रतिशत) अथवा थायोमेथोक्सिम 70 डब्ल्यू. पी.3 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर बोयें। आवश्यकता पड़ने पर एसिटामिप्रिड या इमिडाक्लोप्रिड की 100 मिलीलीटर ग्राम या थायोक्लोप्रिड 21.7 एस.सी. की 300 मिलीलीटर मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

प्रमुख कीट :

फलीछेदक कीट : यह कीट प्रारंभ में हरी मुलायम पत्तियों को खाता है। फली बनने पर फलियों में छेदकर दानों को खाकर क्षति पहुंचाता है। हेलिकोवर्पा, तम्बाकू की सूंडी एवं चित्तीदार फलीछेदक कीट प्रमुख रूप से क्षति पहुंचाते हैं। इनके जैविक प्रबंधन के लिए बैसिलस थुरिनजैन्सिस की एक किलोग्राम हैक्टेयर अथवा एच.एन.पी. वी.-250 एल.ई. की एक मिलीलीटर अथवा निम्बोली का सत 5 प्रतिशत की 50 ग्राम मात्रा प्रति लीटर अथवा 3000 पी.पी.एम. नीम के तेल की 20 मिलीलीटर मात्रा को प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। रासायनिक प्रबंधन के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट की 5 एस.जी. की 0.2 ग्राम मात्रा अथवा प्रोपेनोफॉस 50 ई.सी. की 2 मिली अथवा रिनाक्सीपायर 20 एस. सी. की 0.15 मिलीलीटर मात्रा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

जेसिड्स : इससे शिशु और वयस्क कोमल व नरम पत्तियों का रस चूसकर नुकसान पहुंचाते है। सफेद मक्खी विषाणुजनित पीत रोग का भी संचरण रोगी पौधों से स्वस्थ पौधों तक करती है। इस कीट/रोग का प्रकोप हुआ हो तब थायेमेथोक्सेम 70 प्रतिशत की 3 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित कर बुआई करें।

सफेद मक्खी : यह पौधों के कोमल भागों का रस चूसकर क्षति पहुंचाती है तथा पीत विषाणु रोग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। सफेद रंग की यह मक्खी पत्तियों की निचली सतह पर रहकर रस चूसती है। इस कीट के प्रबंधन के लिए रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर गाड़ दें या जला दें। इसके रासायनिक प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोप्रिड-17.8 एस. एल. की 0.2 मिलीलीटर प्रति लीटर अथवा एसीफेट-75 एस.पी. की एक ग्राम मात्रा का प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा नीम के तेल (3000 पी.पी.एम.) का 20 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

उपज : उन्नत सस्य क्रियाएं व पौध संरक्षण अपनाने पर 10-12 क्विंटल प्रति हैक्टेयर मूंग की उपज प्राप्त होती है। इस प्रकार 60 से 70 दिनों में एक एकड़ क्षेत्र में 7000-8000 रुपये की लागत से 16,000-18,000 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त होती है।

मूंग का अधिक उत्पादन लेने के गुर

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीजों का उपयोग • सही समय पर बुआई करें, देर से बुआई करने पर उपज कम
- किस्मों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार
- बीजोपचार अवश्य करें, जिससे पौधों का बीज एवं मृदाजनित रोगों से प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित होने से हो बचाव
- मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग करें, जिससे भूमि की उर्वराशक्ति बनी रहती है। यह टिकाऊ उत्पादन के लिए है जरूरी
- खरीफ मौसम में मेड़ नाली पद्धति से बुआई
- समय पर खरपतवार नियंत्रण एवं पौध संरक्षण करें, जिससे कीट एवं रोगों का समय पर हो नियंत्रण

समन्वित रोग प्रबंधन:

- गर्मी में खेत की गहरी जुताई
- रोग प्रतिरोधी अथवा सहनशील किस्मों का चयन
- प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजों का प्रयोग
- समय से बुआई
- पीत चितकबरी (मोजेक) रोग के प्रबंधन के लिए बीज की बुआई जुलाई के प्रथम सप्ताह तक कतारों में करें। प्रारंभिक अवस्था में रोगग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। यह रोग विषाणुजनित है, जिसका वाहक सफेद मक्खी कीट है। इसे नियंत्रित करने के लिए ट्रायजोफॉस 40 ई.सी., 2 मिलीलीटर प्रति लीटर अथवा थायोमेथोक्साम 25 डब्ल्यू.जी, 2 ग्राम/लीटर या डायमेथोएट 30 ई.सी. एक मिलीलीटर लीटर मात्रा का पानी में घोल बनाकर 2 या 3 बार 10 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव जरूरी।
- सर्कोस्पोरा पर्णधब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर मेन्कोजेब 75 डब्लयू.पी. की 2.5 ग्राम लीटर या कार्बोन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. की एक ग्राम/लीटर मात्रा का दवा का घोल बनाकर 2-3 बार छिड़काव।
- एंथ्रोक्नोज रोग के प्रबंधन के लिए फफूंदनाशक दवा जैसे मेन्कोजेब 75 डब्ल्यू. पी. 2.5 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. की एक ग्राम/लीटर मात्रा का छिड़काव बुआई के 40 एवं 55 दिनों बाद।
- भभूतिया/फफूंही (पाउडरी मिल्डयू) रोग के लक्षण दिखाई देने पर कैराथन या सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव।

सारणी: मूंग की उन्नत किस्में

क्र. सं.	किस्म	अधिसूचित करने का वर्ष	अवधि (दिन)	प्रति हैक्टेयर उपज (क्विंटल)	अन्य विवरण
1.	के.851	1982	60-65 (ग्रीष्म) 70-80 (खरीफ)	8-10	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, 50-60 फलियां, प्रति पौधा, 10-12 दाना प्रति फली, 100 दानों का वजन 4-4.5 ग्राम
2.	पी.डी.एम.11	1987	65-75	10-12	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला, मेजोक रोग प्रतिरोधी
3.	जे.एम.721	1996	65-70 (ग्रीष्म) 70-75 (खरीफ)	10-12	सम्पूर्ण मध्य प्रदेश तथा ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त 50-60 फलियां प्रति गुच्छा, 10-12 दाना प्रति फली, पीला मोजेक व भभूतिया रोग सहनशील।
4.	एच.यू.एम.एक. (हम 1)	1999	65-70	8-9	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, 40-45 फलियां प्रति पौध, 8-12 दाना प्रति फली, पीला, मोजेक व पर्णधब्बा रोग सहनशील।
5.	पूसा विशाल	2000	60-65	12-14	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, फलियों की लंबाई 9.5-10. 5 सें.मी., पीला मोजेके रोग सहनशील।
6.	पी.डी.एम.-139	2001	58-62	10-12	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग प्रतिरोधी
7.	टी.जे.एम.-3	2007	60-70 (ग्रीष्म) 70-80 (खरीफ)	10-12 12-14	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, 8-11 दाने प्रति फली, 100 दानों का वजन 3.4-4.4 ग्राम, पीला मोजेक व भभूतिया रोग प्रतिरोधी।
8.	आई.पी.एम.2-3	2008	65-70	10-12	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग सहनशील
9.	आई.पी.एम.2-14	2009	62-65	10-11	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसाम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग सहनशील
10.	एम.एच.-421	2014	65-70	10-12	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग सहनशील
11.	आई.पी.एम.-205-7 (विराट)	2016	52-56	10-11	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग प्रतिरोधी
12.	आई.पी.एम. 410-3 (शिखा)	2016	65-70	11-12	ग्रीष्म व खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक व भभूतिया रोग प्रतिरोधी।

कैन बायोसिस ने किसानों के साथ 75वां गणतंत्र दिवस मनाया

भारत के गणतंत्र बनने के बाद पिछले 74 वर्षों में किसानों ने बहुत योगदान दिया है। यह सदैव याद रखना चाहिए कि 'कोरोना' जैसे भीषण समय में भी हमारी अर्थव्यवस्था की जी.डी.पी. दर कृषि क्षेत्र के कारण ही बची हुई है। कृषि क्षेत्र में किसानों का महत्व अद्वितीय है और उनके योगदान के कारण ही भारत एक कृषि प्रधान देश के रूप में जाना जाता है। इससे भविष्य में भारत एक आर्थिक महाशक्ति बन कर उभर रहा है।

भारत के निर्माण में किसानों के योगदान का जश्न मनाने के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनी कैन बायोसिस के कर्मचारियों ने भारत के 75 स्थानों पर एकसाथ किसानों के साथ गणतंत्र दिवस मना कर किसानों को सम्मानित किया। इस पहल को कम्पनी के विपणन एवं मानव संसाधन विभाग के उपाध्यक्ष डॉ. प्रशांत पवार और सेल्स के उपाध्यक्ष राहुल पारखी और कम्पनी के प्रबंध निदेशक संदीपा कानिटकर की अभिनव अवधारणा के माध्यम से कार्यान्वित किया गया था। तीन दशकों से अधिक समय से किसानों के साथ काम करते हुए, कैन बायोसिस जैविक उर्वरक और कीटनाशकों में एक अग्रणी बहुराष्ट्रीय कम्पनी है।

मई 2005 में संदीपा कानिटकर (माइक्रोबायोलॉजिस्ट) द्वारा स्थापित कैन बायोसिस मिट्टी के स्वास्थ्य, फसल पोषण और फसल सुरक्षा के लिए तरल जैव-उर्वरक, जैव-कीटनाशक, बीज उपचार और जैव-उत्तेजक जैसे प्रमाणित कृषि आदानों के निर्माण और आपूर्ति में माहिर है। कैन बायोसिस नवोन्मेषी उत्पादों और सेवाओं के लिए जाना जाता है। कैन बायोसिस के सभी उत्पाद Ecocert, FCO और CIB रजिस्टर हैं। कैन बायोसिस का अनुसंधान एवं विकास विभाग को भारत के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त है।

कैन बायोसिस को गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं, नवम्बर 2023 में कम्पनी के उत्पाद 'स्पीड कम्पोस्ट' को 'फैडरेशन ऑफ इंडियन चैबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ (फिक्की)' द्वारा पहले 'नेशनल सस्टेनेबल एग्रीकल्चर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कम्पनी में दो सौ से ज्यादा कर्मचारी काम करते हैं। कम्पनी के 20 से अधिक उत्पाद भारत के विभिन्न राज्यों में वितरित किए जाते हैं, कैन बायोसिस अपने गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को दस अन्य उन्नत देशों में भी निर्यात करता है।

वर्तमान में बदलते वातावरण और रासायनिक दवाओं के अत्याधिक उपयोग से मिट्टी और फसल के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप फसलों की उपज और उत्पादकता कम हो रही है। ताबा, व्हायटरमोन, सुडो, मिलॅस्टीन के, कॉम्बॅट, स्पीड कम्पोस्ट, सी.एम.-33, नेमॅस्टीन, ब्रिगेड-बी व बिग बॉस यह लोकप्रिय उत्पाद जो कैन बायोसिस कई वर्षों से भारतीय बाज़ार में किसानों की सेवा कर रहे हैं।

बीमारी या आपदा में पशुधन नुकसान से बचाने को पहली बार करवाया जाएगा पशु बीमा

बी.पी.एल. परिवार पशुओं का बीमा कराएंगे तो 40 प्रतिशत प्रीमियम केन्द्र, 30 प्रतिशत राज्य सरकार और 30 प्रतिशत खुद अदा करना होगा

पंजाब के पशु-पालक किसानों को किसी बीमारी या प्राकृतिक आपदा में पशुधन के होने वाले संभावित नुकसान से बचाने के लिए राज्य में पहली बार पशु बीमा योजना की शुरूआत होने वाली है। वित्त वर्ष 2023-24 में योजना के तहत 50 हज़ार पशुओं का बीमा किया जाएगा। इसमें सबसे अधिक लुधियाना के 4000 पशुओं और सबसे कम मोहाली के 800 दुधारू पशुओं को बीमा के दायरे में लाया जाएगा। अगले वित्त वर्ष में इस आंकड़े को और बढ़ाया जाएगा। इस स्कीम को नेशनल लाइवस्टॉक मिशन (एन.एल.एम.) के तहत रिस्क मैनेजमेंट और लाइवस्टॉक इंश्योरेंस के तहत पहली बार पंजाब में शुरू किया जा रहा है। इस पूरी योजना को मोहाली स्थित डायरैक्टर, डेयरी डेवलपमेंट डिपार्टमेंट, पंजाब की देख-रेख में पंजाब के 23 ज़िलों में लागू किया जा रहा है। इस स्कीम के तहत केन्द्र सरकार 25 से 40 फीसदी तक फंडिंग करेगी और 25 से 30 फीसदी योगदान राज्य सरकार और 30 से 50 फीसदी तक योगदान पशु-पालकों का होगा। बीते सालों में लंपी स्किन और उसके बाद बाढ़ के चलते बड़ी संख्या में पशुधन से हाथ धोना पड़ा है। सभी पशुओं के 12 अंकों वाला ईयर टैग लगाया जाएगा और पशु के साथ उनके मालिकों के भी फोटोग्राफ लिए जाएंगे।

प्रीमियम की कैटेगरी

केन्द्र सरकार की योजना के तहत बी.पी.एल., एस.सी. और एस.टी. परिवारों के पांच पशुओं तक के बीमा प्रीमियम का 40 फीसदी केन्द्र, 30 फीसदी राज्य सरकार और 30 फीसदी उनको खुद अदा करना होगा। वहीं गरीबी रेखा से ऊपर के परिवारों के पांच पशुओं तक का बीमा प्रीमियम का 25 फीसदी केन्द्र, 25 फीसदी राज्य सरकार और 50 फीसदी खुद अदा करना होगा। इसके अलावा अगर कोई परिवार पांच से अधिक पशुओं का बीमा करवाना चाहता है, तो पूरा प्रीमियम उनको खुद वहन करना होगा।

कम्पनियों से मांगा प्रपोजल

पंजाब सरकार ने सभी पंजीकृत जनरल इंश्योरेंस कम्पनियों से प्रीमियम प्रपोजल मांगा है। सबसे कम दरों पर अधिक सुविधाएं देने वाली कम्पनी को 50 हज़ार पशुओं का बीमा करने का मौका मिलेगा।

15 दिन में मिलेगा क्लेम

कम्पनी द्वारा उपरोक्त दस्तावेज प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर क्लेम का निपटान किया जाएगा। यदि क्लेम 3 सप्ताह तक भी सेटल नहीं होता है, तो 12 फीसदी की दर से ब्याज का भी भुगतान करना होगा।